BIHAR SHODH SAMAAGAM, VOL. 1, ISSUE 4, p.p 27-32
(2023) ISSN : 3048-6971

रवींद्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन में मानवीय मूल्यों का स्थान एवं वर्तमान समय में इसकी उपादेयता

डौली कुमारी

शोध सार :

रवींद्रनाथ टैगोर न केवल एक महान साहित्यकार थे, बल्कि एक प्रगतिशील शिक्षाविद् और चिंतक भी थे। उनका शिक्षा-दर्शन मानवीय मूल्यों, स्वतंत्रता, रचनात्मकता, और प्रकृति के साथ सामंजस्य पर आधारित था। टैगोर का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि समग्र व्यक्तित्व का निर्माण है जिसमें करुणा, सहिष्णुता, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिकता जैसे मूल्यों का समावेश अनिवार्य है। टैगोर के शिक्षण संस्थान 'शांति निकेतन' में उन्होंने इन मूल्यों को व्यवहारिक रूप में लागू किया। उनका शैक्षिक दृष्टिकोण बालक-केंद्रित, अनुभवात्मक और प्रकृति के निकट था, जहाँ सीखना केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं था। उन्होंने बालकों में स्वतंत्र चिंतन, आत्म-अनुशासन और मानवीय संवेदनाओं के विकास पर बल दिया। आज के संदर्भ में, जब समाज मूल्यहीनता, नैतिक संकट और व्यक्तिवादी सोच से जूझ रहा है, टैगोर के शिक्षा-दर्शन की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा और मानवतावादी दृष्टिकोण का अभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। ऐसे में टैगोर के विचार एक वैकल्पिक मार्ग प्रदान करते हैं, जो शिक्षा को पुनः एक मूल्य-आधारित प्रक्रिया बनाने की प्रेरणा देते हैं। यह शोध पत्र टैगोर के शिक्षा-दर्शन में अंतर्निहित मानवीय मूल्यों की पहचान करता है, उनके प्रयोगात्मक स्वरूप को समझने का प्रयास करता है, और यह विश्लेषण करता है कि आधुनिक समय में इन मूल्यों को किस प्रकार शिक्षा प्रणाली में प्रभावी रूप से पुनर्स्थापित किया जा सकता है।

कुंजी शब्द : रवीन्द्रनाथ टैगोर, शिक्षा दर्शन, मानवीय मूल्य, मूल्य आधारित शिक्षा, मूल्य संकट

- **अध्ययन की पृष्ठभूमि:**

रवींद्रनाथ टैगोर एक प्रखर साहित्यकार, कवि, दार्शनिक और शिक्षाविद् थे, जिनका शिक्षा दर्शन मानवीय मूल्यों, स्वतंत्रता, रचनात्मकता और प्रकृति के साथ सामंजस्य पर आधारित था। वे शिक्षा को केवल ज्ञान संचय का साधन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के समग्र विकास और सहानुभूति, करुणा, सहयोग, और नैतिकता जैसे मानवीय मूल्यों के संवर्धन का माध्यम मानते थे। शांति निकेतन (विश्व-भारती विश्वविद्यालय) की स्थापना उनके दर्शन का व्यावहारिक स्वरूप है **(टैगोर, 1917)**[1] जो प्रकृति के बीच रचनात्मकता और मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देता है। वर्तमान समय में, जब शिक्षा प्रणाली में प्रतिस्पर्धा, तकनीकी प्रगति और व्यावसायीकरण का बोलबाला है, टैगोर का दर्शन मानवीय मूल्यों को पुनर्जनन करने और नैतिकता को शिक्षा के केंद्र में लाने के लिए प्रासंगिक है। इस अध्ययन का उद्देश्य टैगोर के शिक्षा दर्शन में मानवीय मूल्यों की भूमिका और उनके महत्व का विश्लेषण करना तथा इसकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता और उपादेयता का मूल्यांकन करना है। यह अध्ययन साहित्य समीक्षा पर आधारित है, जिसमें टैगोर की पुस्तकें (*शिक्षा*, *शांति निकेतन*), उनके लेख, पत्र, भाषण, विश्व-भारती के दस्तावेज, और समकालीन शोध पत्रों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया है ।

- **रवींद्रनाथ टैगोर संक्षिप्त जीवन परिचय :**

रवींद्रनाथ टैगोर (1861-1941) भारत के महान कवि, साहित्यकार, दार्शनिक, और शिक्षाविद् थे। उनका जन्म 7 मई, 1861 को कोलकाता, बंगाल में एक समृद्ध और सांस्कृतिक परिवार में हुआ। उनके पिता देवेंद्रनाथ टैगोर ब्रह्म समाज के प्रमुख नेता थे। टैगोर ने औपचारिक शिक्षा कम प्राप्त की, लेकिन घर पर ही साहित्य, संगीत, और कला की शिक्षा प्राप्त की। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और कविता, उपन्यास, नाटक, कहानी, निबंध, और गीत लेखन में उत्कृष्ट योगदान दिया। उनकी कृति *गीतांजलि* (1910) के लिए उन्हें 1913 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला, जो किसी भारतीय के लिए प्रथम था। टैगोर ने 1901 में शांति निकेतन में एक स्कूल की स्थापना की, जो बाद में विश्व-भारती विश्वविद्यालय बना, जहां उनके शिक्षा दर्शन को मूर्त रूप दिया गया। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी हिस्सा लिया, लेकिन हिंसा का विरोध किया। उनकी रचनाएँ, जैसे *जन गण मन* (भारत का राष्ट्रगान) और *आमार सोनार बांग्ला* (बांग्लादेश का राष्ट्रगान), आज भी प्रासंगिक हैं। टैगोर का निधन 7 अगस्त, 1941 को हुआ, लेकिन उनका साहित्य और शिक्षा दर्शन आज भी विश्व भर में प्रेरणा देता है।

- रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन दर्शन

रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन दर्शन भारतीय और पाश्चात्य दार्शनिक परंपराओं का अनूठा संगम है, जो मानवता, प्रकृति, और आध्यात्मिकता के बीच गहरा सामंजस्य स्थापित करता है। टैगोर का दर्शन उपनिषदों, वैष्णव भक्ति, कबीर की रहस्यवादी कविताओं, और ब्रह्म समाज की धार्मिक भावना से प्रेरित था, साथ ही शेक्सपियर, वर्ड्सवर्थ, और गोएथे जैसे पाश्चात्य साहित्यकारों का प्रभाव भी उनके विचारों में झलकता है। उनका दर्शन 'कॉन्क्रीट मोनिज्म' के रूप में जाना जाता है, जो एकत्व को स्वीकार करता है, परंतु यह एकत्व अमूर्त नहीं, बल्कि ठोस और समग्र है, जिसमें विश्व की विविधता समाहित होती है। टैगोर के अनुसार, सत्य एक है, लेकिन यह मानव व्यक्तित्व के माध्यम से व्यक्त होता है, और मानव जीवन का उद्देश्य इस सत्य को अनुभव करना और प्रकट करना है **(टैगोर,1919)**[2]।

डौली कुमारी
शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग
राधा गोविंद विश्वविद्यालय रामगढ़, झारखंड

टैगोर का जीवन दर्शन 'विश्व मानव' की अवधारणा पर केंद्रित है। उनके अनुसार, विश्व मानव वह परम सत्य है जो विश्व के सभी परिवर्तनों, व्यवस्थाओं, और गतिविधियों के पीछे कार्यरत है। यह विश्व मानव प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान है, चाहे वह कितना भी साधारण या निर्धन हो। टैगोर कहते हैं, "वह वहाँ है जहाँ किसान कठिन भूमि जोत रहा है, जहाँ पथ निर्माता पत्थर तोड़ रहा है।" उनके लिए, ईश्वर और मानव अलग नहीं हैं; ईश्वर सगुण और निर्गुण दोनों रूपों में विश्व मानव के रूप में विद्यमान है, जो मानव गुणों का पूर्ण आदर्श है। यह विश्व मानव प्रकृति और मानवता को एक सूत्र में बाँधता है, और टैगोर का दर्शन इस एकता को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में देखने की प्रेरणा देता है।

टैगोर मानव की स्वतंत्रता और रचनात्मकता पर विश्वास करते थे। वे मानते थे कि मानव एक परिमित-अपरिमित प्राणी है, जो प्रकृति की सीमाओं से बंधा है, परंतु आध्यात्मिक क्षेत्र में स्वतंत्र है। यह द्वंद्व मानव जीवन को सत्य, सौंदर्य, और नैतिकता की खोज की ओर प्रेरित करता है। टैगोर व्यक्तिवाद और प्रकृतिवाद में विश्वास रखते थे, लेकिन उनका अंतिम लक्ष्य मानवता की एकता था **(टैगोर, 1931)**[3]। वे प्रकृति को ब्रह्म का प्रकटीकरण मानते थे, जो अपने रंगों, रूपों, और लय के माध्यम से मानव को आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करती है। उनके लिए, मानव और प्रकृति के बीच गहरा आध्यात्मिक संबंध होना चाहिए, जो जीवन को शुद्ध और प्रेरणादायक बनाता है।

टैगोर का दर्शन विश्व बंधुत्व और सांस्कृतिक संश्लेषण पर आधारित था। वे आक्रामक राष्ट्रवाद के विरोधी थे और मानवता की एकता में विश्वास रखते थे। उनके विचार में, शिक्षा, कला, और साहित्य के माध्यम से व्यक्ति को अपनी सीमाओं से परे जाकर विश्व के साथ जुड़ना चाहिए। शांति निकेतन और विश्व-भारती विश्वविद्यालय उनके इस दर्शन के जीवंत उदाहरण हैं, जहाँ उन्होंने शिक्षा को मानवीय मूल्यों, रचनात्मकता, और वैश्विक एकता के लिए समर्पित किया। टैगोर का जीवन दर्शन आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि यह हमें सामाजिक, सांस्कृतिक, और पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए एकता, रचनात्मकता, और आध्यात्मिकता का मार्ग दिखाता है।

- **टैगोर का शिक्षा दर्शन :**

रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन आत्म-साक्षात्कार, प्रकृति के साथ सामंजस्य, और मानवता की एकता पर आधारित है। उनके अनुसार, शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार है, जो व्यक्ति को अपनी अंतर्निहित आध्यात्मिक क्षमता और विश्व आत्मा के साथ एकरूपता का बोध कराता है। टैगोर, जिन्हें उपनिषदों और गीता से प्रेरणा मिली, ने भारतीय वेदांतिक परंपराओं को पाश्चात्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ संश्लेषित किया **(मुखर्जी,1962)**[4]। वे किताबी ज्ञान और रटने वाली शिक्षा के विरोधी थे, क्योंकि यह बुद्धि को सीमित करती है और प्रकृति से दूरी बढ़ाती है। टैगोर ने शारीरिक विकास पर भी बल दिया, जिसमें खेल, श्रम और प्रकृति के साथ संलग्नता शामिल थी, ताकि बच्चे शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहें। अपनी रचना माय स्कूल में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शान्तिनिकेतन की स्थापना और उनकी शिक्षा प्रणाली के दर्शन को विस्तार से बताया है **(टैगोर, 1980)**[5]। उनकी शिक्षा प्रणाली, जिसका प्रतीक शांति निकेतन है, बच्चों को स्वतंत्र, जिज्ञासु और रचनात्मक बनाती थी, जहाँ मातृभाषा में शिक्षा, कला, संगीत और प्रकृति के साथ संवाद को प्रोत्साहित किया जाता था। टैगोर का मानना था कि शिक्षा को व्यक्ति और पर्यावरण के बीच सामंजस्य स्थापित करना चाहिए, जिससे वैश्विक बंधुत्व और मानवता के प्रति प्रेम विकसित हो। शांति निकेतन में खुला प्राकृतिक वातावरण, सादा जीवन और उच्च विचार की भावना बच्चों को आत्मनिर्भर और संवेदनशील बनाती थी।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की "यूनिवर्सल मैन" (सार्वभौमिक मानव) की संकल्पना उनके मानवतावादी और आध्यात्मिक दर्शन का मूल है, जो मानव को प्रकृति, समाज और विश्व के साथ एकीकृत करता है। टैगोर का मानना था कि मानव केवल व्यक्तिगत या राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक ऐसी सार्वभौमिक चेतना का हिस्सा है जो सभी संस्कृतियों, धर्मों और जातियों को जोड़ती है। उनकी पुस्तक *टुवर्ड्स यूनिवर्सल मैन* में यह विचार स्पष्ट होता है **(टैगोर,1961)**[6]। टैगोर के अनुसार, शिक्षा और कला के माध्यम से मानव अपनी रचनात्मकता और संवेदनशीलता को विकसित कर सकता है, जिससे वह स्वयं को विश्व के साथ सामंजस्य में पाता है। उन्होंने शान्तिनिकेतन में ऐसी शिक्षा प्रणाली स्थापित की, जो प्रकृति-केंद्रित, स्वतंत्र और समग्र थी, ताकि व्यक्ति अपनी आंतरिक क्षमता को पहचान सके। यूनिवर्सल मैन का दर्शन सामाजिक समानता, सांस्कृतिक एकता और आध्यात्मिक स्वतंत्रता पर जोर देता है। टैगोर का यह विचार आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि यह वैश्विक एकता और मानवता की साझा चेतना को प्रोत्साहित करता है, जो आधुनिक विश्व की चुनौतियों के समाधान में सहायक है। टैगोर का दर्शन आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि यह आधुनिक शिक्षा में नैतिकता, रचनात्मकता और पर्यावरणीय संवेदनशीलता की कमी को दूर करने का मार्ग दिखाता है। इनकी शिक्षा दर्शन की कुछ प्रमुख अवधारणात्मक विशेषताएं इस प्रकार हैं –

- **बौद्धिक विकास :**टैगोर ने बौद्धिक विकास पर विशेष जोर दिया, लेकिन इसे रटने या किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं माना। उनके लिए बौद्धिक विकास का अर्थ था कल्पनाशक्ति, रचनात्मक स्वतंत्र चिंतन, जिज्ञासा और मानसिक सजगता का विकास। शांति निकेतन में बच्चों को कठिन साहित्य पढ़ाया जाता था, जो उनकी समझ से परे हो सकता था, लेकिन इसका उद्देश्य उनकी सोच को प्रेरित करना और जिज्ञासा को बढ़ावा देना था। टैगोर का मानना था कि शिक्षा को बच्चे के स्वाभाविक सीखने के तरीके को प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे उसका सर्वांगीण विकास हो।
- **प्रकृति के साथ स्वाभाविक विकास :**टैगोर प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ शिक्षक मानते थे। उनके अनुसार, प्रकृति बच्चों को स्वाभाविक रूप से ज्ञान और प्रेरणा प्रदान

करती है। शांति निकेतन में कक्षाएँ खुले वातावरण में, पेड़ों की छाँव में आयोजित की जाती थीं, ताकि बच्चे प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकें। टैगोर का मानना था कि प्रकृति के बीच शिक्षा प्राप्त करने से बच्चों में करुणा, सहानुभूति और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित होती है। प्रकृति बच्चों के व्यवहार और चरित्र को आकार देती है, बिना किसी बाहरी दबाव के।

- **स्वतंत्रता और स्वायत्तता :**स्वतंत्रता टैगोर के शिक्षा दर्शन का मूल तत्व थी। उन्होंने बच्चों को बौद्धिक, भावनात्मक और इच्छाशक्ति की स्वतंत्रता देने की वकालत की। शांति निकेतन, श्रीनिकेतन और ब्रह्मचर्य आश्रम में बच्चों को अपनी रुचि के क्षेत्र चुनने की स्वतंत्रता थी। टैगोर का मानना था कि शिक्षा व्यक्ति के हृदय के अनुरूप होनी चाहिए। स्वतंत्रता के तीन रूप—हृदय की स्वतंत्रता, बुद्धि की स्वतंत्रता और इच्छा की स्वतंत्रता—शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं। यह स्वतंत्रता व्यक्ति को आत्मनिर्भर और आत्म-जागरूक बनाती है।
- **आत्म-साक्षात्कार और आध्यात्मिकता:** टैगोर के लिए शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार था। वे मानते थे कि मानवता का सार आध्यात्मिकता में निहित है। शिक्षा को व्यक्ति की आत्मा को जागृत करना चाहिए, ताकि वह अपनी वास्तविक क्षमताओं को पहचान सके। टैगोर का दर्शन उपनिषदों और वैष्णव भक्ति से प्रेरित था, जिसमें आध्यात्मिकता को मानव जीवन का आधार माना गया। उनके अनुसार, शिक्षा को व्यक्ति को केवल बाहरी दुनिया से नहीं, बल्कि उसके आंतरिक सत्य से जोड़ना चाहिए। **मानवता के प्रति प्रेम और वैश्विक एकता**: टैगोर का शिक्षा दर्शन वैश्विक बंधुत्व और मानवता के प्रति प्रेम पर आधारित था। वे शिक्षा को विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बीच समझ और सहयोग बढ़ाने का माध्यम मानते थे। विश्व-भारती विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य पूर्व और पश्चिम के विचारों का संश्लेषण करना था। टैगोर का मानना था कि शिक्षा को व्यक्ति को वैश्विक नागरिक बनाना चाहिए, जो अपनी जड़ों से जुड़ा हो, लेकिन विश्व के प्रति सहानुभूति और सहयोग की भावना रखता हो **शारीरिक विकास:** टैगोर ने शारीरिक विकास को भी शिक्षा का अभिन्न अंग माना। वे चाहते थे कि बच्चे शारीरिक रूप से स्वस्थ और सक्रिय हों। शांति निकेतन में खेल, योग और अन्य शारीरिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाता था, ताकि बच्चों का शारीरिक और मानसिक संतुलन बना रहे।
- **व्यावहारिक और वास्तविक शिक्षण:** टैगोर का मानना था कि शिक्षा को व्यावहारिक और वास्तविक होना चाहिए, न कि सैद्धांतिक या कृत्रिम। उन्होंने किताबी ज्ञान के बजाय रचनात्मकता और कौशल विकास पर जोर दिया। शांति निकेतन में बच्चों को विभिन्न शिल्प और कला सिखाई जाती थी, ताकि वे अपने क्षेत्र में निपुण बन सकें। टैगोर का यह दृष्टिकोण ग्रामीण पुनर्निर्माण में भी सहायक था, क्योंकि यह बच्चों को आत्मनिर्भर बनाता था।
- **कला का महत्व:** टैगोर ने शिक्षा में कला (संगीत, नृत्य, नाटक, कविता, और चित्रकला) को विशेष महत्व दिया। उनके अनुसार, कला मानव की आत्मा को समृद्ध करती है और उसे प्रकृति के साथ जोड़ती है। शांति निकेतन में बच्चे कला के विभिन्न रूपों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। टैगोर का मानना था कि भाषा मानवों के बीच संवाद स्थापित करती है, जबकि संगीत और कला उन्हें प्रकृति के साथ एकाकार करती हैं। कला के माध्यम से बच्चे अपनी भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकते हैं।
- **मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा:** टैगोर ने मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने पर बल दिया। उनके अनुसार, मातृभाषा में व्यक्ति अपनी भावनाओं और विचारों को सबसे सहज और स्वाभाविक रूप से व्यक्त कर सकता है। मातृभाषा के उपयोग से शिक्षा अधिक प्रभावी और सार्थक बनती है।
- **नैतिक और सामाजिक विकास:** टैगोर ने नैतिक और सामाजिक विकास को शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना। वे चाहते थे कि शिक्षा बच्चों में सहानुभूति, सहयोग, और परस्पर प्रेम की भावना विकसित करे। शांति निकेतन में बच्चों को सामाजिक गतिविधियों और सामूहिक कार्यों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था, ताकि वे समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझ सकें।
- **किताबी शिक्षा का विरोध:** टैगोर किताबी शिक्षा के प्रबल विरोधी थे। उनका मानना था कि किताबों पर आधारित शिक्षा बच्चे की स्वाभाविक रचनात्मकता और जिज्ञासा को दबा देती है। शांति निकेतन में बच्चों को किताबों से परे, अनुभव आधारित और रचनात्मक शिक्षा दी जाती थी। टैगोर का कहना था कि किताबी शिक्षा बच्चों को पुस्तकीय बनाती है और उनकी मौलिकता को नष्ट करती है।
- **ग्रामीण पुनर्निर्माण के लिए शिक्षा:** टैगोर ने ग्रामीण भारत की गरीबी और पिछड़ेपन को देखते हुए शिक्षा को ग्रामीण पुनर्निर्माण का साधन बनाया। श्रीनिकेतन की स्थापना का उद्देश्य ग्रामीण समुदायों को शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाना था। बच्चों को विभिन्न शिल्प और व्यावहारिक कौशल सिखाए जाते थे, ताकि वे अपने समुदाय की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को सुधार सकें।

- **पूर्व और पश्चिम का संश्लेषण:** टैगोर का शिक्षा दर्शन पूर्वी आध्यात्मिकता और पाश्चात्य प्रगतिशीलता का संश्लेषण था। विश्व-भारती विश्वविद्यालय इस दृष्टिकोण का प्रतीक था, जहाँ भारतीय और पाश्चात्य संस्कृतियों का समन्वय किया गया। टैगोर का मानना था कि शिक्षा को दोनों संस्कृतियों के सर्वोत्तम तत्वों को अपनाना चाहिए
- **महिलाओं की शिक्षा के संदर्भ में रवींद्रनाथ टैगोर के विचार:** रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन समग्र मानव विकास, स्वतंत्रता, और रचनात्मकता पर आधारित था, जिसमें महिलाओं की शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया। टैगोर का मानना था कि शिक्षा लैंगिक भेदभाव से परे होनी चाहिए और महिलाओं को पुरुषों के समान ही बौद्धिक, आध्यात्मिक, और रचनात्मक विकास के अवसर मिलने चाहिए। उनके विचार भारतीय सामाजिक संदर्भ में क्रांतिकारी थे, क्योंकि उस समय महिलाओं की शिक्षा को अक्सर उपेक्षित किया जाता था या केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित माना जाता था। टैगोर ने शांति निकेतन और विश्व-भारती विश्वविद्यालय में सहशिक्षा को प्रोत्साहित किया, जहाँ लड़के और लड़कियाँ साथ-साथ पढ़ते थे, जो उस युग में एक प्रगतिशील कदम था। टैगोर का मानना था कि महिलाएँ समाज की रीढ़ हैं और उनकी शिक्षा सामाजिक प्रगति के लिए आवश्यक है। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा पर भी ध्यान दिया, विशेष रूप से श्रीनिकेतन के माध्यम से, जहाँ व्यावहारिक कौशल और शिल्प प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था। यह महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और ग्रामीण पुनर्निर्माण में योगदान देने के लिए था। टैगोर ने महिलाओं को केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं माना, बल्कि उन्हें वैश्विक बंधुत्व और मानवता के प्रति प्रेम जैसे उच्च आदर्शों से जोड़ा।
- **रवींद्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन में मानवीय मूल्यों का स्थान**
- आज का समाज एक गहरे **मूल्य संकट** के दौर से गुजर रहा है। भौतिक प्रगति, तकनीकी विकास और उपभोक्तावाद की तेज़ दौड़ में मानवीय मूल्यों की उपेक्षा हो रही है। शिक्षा, जो मूलतः जीवन को मूल्यनिष्ठ बनाने का साधन थी, अब महज़ रोजगार का माध्यम बन गई है। संवेदनशीलता, सहिष्णुता, सत्य, करुणा, सेवा, आत्मानुशासन, और आध्यात्मिकता जैसे गुण हाशिये पर चले गए हैं। युवा वर्ग दिशाहीन होता जा रहा है, और सामाजिक असंतुलन बढ़ता जा रहा है। ऐसे समय में रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन की ओर देखना अत्यंत आवश्यक है। टैगोर का शैक्षिक चिंतन केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित नहीं, बल्कि एक संपूर्ण मानवीय विकास का दर्शन है। उनके दर्शन में निहित मानवीय मूल्य आज के समय में अत्यधिक प्रासंगिक हैं।
- **स्वतंत्रता का मूल्य :** रवीन्द्रनाथ टैगोर का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को मानसिक, शारीरिक और आत्मिक स्वतंत्रता प्रदान करना है। उन्होंने बच्चों को बंधनमुक्त वातावरण में शिक्षा देने की वकालत की। टैगोर कहते हैं कि एक सच्चा मनुष्य वही है जो अपनी सोच, कल्पना और अभिव्यक्ति में स्वतंत्र हो। उनका मानना था कि जब तक शिक्षा में रचनात्मकता, स्वतंत्र विचार और स्व-अभिव्यक्ति की जगह नहीं होगी, तब तक हम असली मानवता को नहीं जगा सकते। आज जब समाज में अनुशासन के नाम पर बच्चों की स्वायत्तता छीनी जा रही है, तब टैगोर का यह मूल्य एक मार्गदर्शक बन सकता है। उन्होंने शांति निकेतन जैसे संस्थानों में खुले आकाश के नीचे शिक्षा दी, जिससे प्रकृति और शिक्षा का सुंदर समन्वय हो सके।
- **प्रकृति से प्रेम :** टैगोर ने शिक्षा को प्रकृति के समीप रखने की वकालत की। उनका मानना था कि प्रकृति मनुष्य की प्रथम गुरू है। वह मानते थे कि बच्चों को कक्षा की चारदीवारी से निकालकर प्रकृति के बीच लाया जाए ताकि वे सौंदर्य, समरसता और संतुलन को आत्मसात कर सकें **(दत्त और रॉबिन्सन 1989)**[7]। आज जबकि मानव पर्यावरण का दोहन कर रहा है और जलवायु परिवर्तन जैसे संकट उत्पन्न हो रहे हैं, टैगोर की यह दृष्टि अत्यंत आवश्यक हो जाती है। उनका विचार था कि प्रकृति के साथ तादात्म्य से ही व्यक्ति में करुणा, सहानुभूति और संतुलन के गुण विकसित होते हैं। इसलिए उनके शैक्षिक दर्शन में 'पर्यावरणीय नैतिकता' का गहरा स्थान है।
- **सत्य की खोज :** टैगोर का मानना था कि शिक्षा केवल तथ्यों की जानकारी नहीं, बल्कि सत्य की खोज है। उन्होंने बुद्ध और उपनिषदों की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए शिक्षा को आत्म-ज्ञान की यात्रा माना। सत्य को उन्होंने केवल बाह्य सत्य नहीं, बल्कि आंतरिक और आध्यात्मिक सत्य के रूप में देखा। आज के भ्रामक और नकली सूचनाओं से भरे युग में, टैगोर का यह मूल्य अत्यंत प्रासंगिक है। उनके अनुसार शिक्षक का काम यह नहीं कि वह छात्र को सिखाए कि क्या सत्य है, बल्कि वह सत्य को खोजने की प्रक्रिया में उसका मार्गदर्शन करे।
- **सामंजस्य और सह-अस्तित्व :** टैगोर का मानना था कि विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और विचारों के बीच सामंजस्य आवश्यक है। उन्होंने 'विश्वभारती' की स्थापना इसी विचार से की कि पूरी दुनिया एक ही विद्यालय है। उनके लिए शिक्षा का उद्देश्य एक ऐसी चेतना विकसित करना था जिसमें व्यक्ति अन्य धर्मों,

जातियों, राष्ट्रों के साथ सह-अस्तित्व और प्रेम का संबंध बना सके। आज जब समाज ध्रुवीकरण और असहिष्णुता से ग्रस्त है, टैगोर का यह मूल्य समाज में शांति और भाईचारे की स्थापना में सहायक हो सकता है।

- **आत्मानुशासन :** टैगोर अनुशासन को बाहरी नियंत्रण नहीं, बल्कि आत्म-नियंत्रण मानते थे। उनका कहना था कि बच्चों पर कठोर नियम थोपने की बजाय उनमें आत्मबोध और आत्मदायित्व का विकास किया जाना चाहिए। उन्होंने शिक्षा में सृजनात्मक गतिविधियों को प्राथमिकता दी जिससे बालक में भीतर से अनुशासन उत्पन्न हो। आज जबकि अनुशासन का अर्थ कठोर नियंत्रण मान लिया गया है, टैगोर का यह दृष्टिकोण अधिक मानवीय और प्रभावशाली है।
- **करुणा और सेवा भावना :** टैगोर ने शिक्षा को करुणा और सेवा के भाव से जोड़ने पर ज़ोर दिया। उन्होंने शिक्षा को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने की बात की और ग्राम विकास योजनाओं में भी सक्रिय भूमिका निभाई। उनका मानना था कि एक शिक्षित व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह समाज की भलाई में अपना योगदान दे। आज की स्वार्थपरक शिक्षा प्रणाली में यह मूल्य अधिक प्रासंगिक हो गया है। उन्होंने छात्रों को गांवों में भेजकर ग्रामीण जीवन की समस्याओं को समझने और उनका समाधान खोजने के लिए प्रेरित किया।
- **सौंदर्यबोध :** टैगोर का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं बल्कि सौंदर्यबोध का विकास भी होना चाहिए। उन्होंने संगीत, कला, नृत्य और साहित्य को शिक्षा का अभिन्न अंग माना। उनका विश्वास था कि सौंदर्यबोध से व्यक्ति में संवेदनशीलता, सहिष्णुता और मानवता का विकास होता है। आज जब शिक्षा प्रणाली पूरी तरह व्यावसायिक और अंकों पर आधारित हो गई है, तब टैगोर की यह दृष्टि नयी पीढ़ी को मानवीय बनाने की दिशा में प्रेरणा प्रदान कर सकती है।
- **सांस्कृतिक चेतना :** टैगोर ने भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को शिक्षा में समाहित करने की आवश्यकता बताई। उनका मानना था कि शिक्षा को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जुड़ा होना चाहिए ताकि छात्र अपनी पहचान और मूल्यों को समझ सकें। उन्होंने शिक्षा में भारतीय संगीत, कला, भाषा और परंपराओं को महत्व दिया। आज की पश्चिममुखी शिक्षा प्रणाली में टैगोर की यह चेतावनी अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है कि आधुनिकता का अर्थ अपनी जड़ों से कटना नहीं है।
- **अंतर्राष्ट्रीयता :** टैगोर ने सीमाओं से परे मानवता की बात की। वे 'विश्वमानव' के पक्षधर थे। उनका शिक्षा दर्शन राष्ट्रवाद की संकीर्णता से ऊपर उठकर वैश्विक नागरिकता का संदेश देता है। उन्होंने 'विश्वभारती' विश्वविद्यालय की स्थापना इसी उद्देश्य से की ताकि छात्र वैश्विक दृष्टिकोण विकसित कर सकें। आज के वैश्वीकरण के युग में, जब राष्ट्रवाद का उग्र रूप सामने आ रहा है, टैगोर का अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण अधिक सशक्त और प्रासंगिक बन गया है।
- **आध्यात्मिकता :** टैगोर का शिक्षा दर्शन आध्यात्मिकता से ओतप्रोत था, परन्तु यह किसी विशेष धर्म के अनुकरण से नहीं, बल्कि आत्म-चेतना और ब्रह्म से एकात्मकता की भावना से जुड़ा था **(इस्लाम,1990)**[8]। उन्होंने आत्मा और ब्रह्म के संबंध को शिक्षा का मूल माना। उनका मानना था कि शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर छिपे परम सत्य को जान सकता है। आज जब शिक्षा पूरी तरह भौतिकवादी और यांत्रिक होती जा रही है, टैगोर का यह आध्यात्मिक दृष्टिकोण आत्म-परिष्कार और आंतरिक शांति के लिए अत्यंत आवश्यक है।
- **रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन में निहित मानवीय मूल्यों की आज के समय में उपादेयता :**
- आज का वैश्विक और भारतीय समाज गहरे मूल्य संकट जूझ रहा है। आधुनिकता, तकनीकी विकास और उपभोक्तावाद की तेज़ दौड़ में नैतिकता, संवेदना, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मानुशासन जैसे मानवीय मूल्य लगातार क्षीण होते जा रहे हैं। भारत जैसे सांस्कृतिक राष्ट्र में जहाँ "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना मूल रही है, वहाँ आज मॉब लिंचिंग, सांप्रदायिक दंगे, जाति आधारित हिंसा, और राजनीतिक ध्रुवीकरण जैसी घटनाएँ समाज को विखंडित कर रही हैं। युवा वर्ग में नशे की लत, अपराध, और मानसिक अवसाद तेजी से बढ़ रहे हैं, जो यह दर्शाते हैं कि आत्मिक और नैतिक मूल्यों की कमी गहरी होती जा रही है। पारिवारिक संरचनाएं टूट रही हैं, विवाह जैसे संस्थान कमज़ोर हो रहे हैं, और भ्रष्टाचार तथा मूल्यविहीन राजनीति ने जनविश्वास को डगमगा दिया है। वैश्विक स्तर पर आतंकवाद, शरणार्थी संकट, पर्यावरणीय शोषण और बाजारीकरण के नाम पर मानवीय संबंधों का व्यापार होते देखना अब सामान्य हो गया है। आज समाज की चेतना विकेंद्रित, असंवेदनशील और स्वार्थपरक होती जा रही है, और यही मूल्य संकट की सबसे भयानक तस्वीर है।
- ऐसे संकट के समय में रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक एवं मानवीय विचार समाज को न केवल राह दिखा सकते हैं, बल्कि एक समग्र समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। टैगोर का शिक्षा दर्शन स्वतंत्रता, करुणा, आत्मानुशासन, सौंदर्यबोध, सहअस्तित्व और

आध्यात्मिक चेतना पर आधारित है, जो आज के भटके हुए समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं **(रॉय,2001)**[9]। उनका मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति नहीं, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व – शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आत्मिक विकास का माध्यम है। आज जब समाज में कट्टरता और अलगाव की भावना प्रबल हो रही है, टैगोर का "विश्वमानव" का विचार हमें समरसता और एकता की दिशा में प्रेरित करता है **(ओकॉनेल, 2013)**[10]। उनकी सोच हमें प्रकृति से जुड़ाव, सांस्कृतिक चेतना, तथा करुणा और सेवा की भावना को जीवन में उतारने का संदेश देती है। यदि टैगोर के मूल्यों को शिक्षा, राजनीति और सामाजिक नीति में आत्मसात किया जाए, तो समाज को एक संवेदनशील, न्यायपूर्ण और संतुलित दिशा दी जा सकती है। टैगोर आज केवल अतीत की आवाज़ नहीं, बल्कि भविष्य की आशा हैं।

- **निष्कर्ष :**
- रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन मानव केंद्रित, प्रकृति-संलग्न और मूल्यों पर आधारित था। उनके विचारों में शिक्षा केवल औपचारिक ज्ञान की प्रक्रिया नहीं, बल्कि मनुष्य के अंतःकरण, चेतना और संवेदना के समग्र विकास का माध्यम थी। उन्होंने शिक्षा को स्वाधीनता, रचनात्मकता, करुणा, सह-अस्तित्व और आत्मानुशासन जैसे मानवीय मूल्यों के साथ जोड़ा। टैगोर का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी के लिए व्यक्ति को तैयार करना नहीं, बल्कि उसे एक अच्छा इंसान बनाना है जो समाज, प्रकृति और समूची मानवता के प्रति उत्तरदायी हो। आज के मूल्य संकट से जूझते समाज में टैगोर की शिक्षावादी दृष्टि अत्यंत प्रासंगिक हो उठती है। सांप्रदायिकता, जातिवाद, पर्यावरणीय संकट, नशाखोरी, उपभोक्तावाद और परिवारों के टूटते ढांचे के बीच हमें पुनः ऐसे शैक्षिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो मानवीय संवेदनाओं को पुनर्जीवित कर सके। इस संदर्भ में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** का आगमन एक सकारात्मक पहल है। इस नीति में नैतिक मूल्यों, राष्ट्रीयता, करुणा, संवेदनशीलता और सांस्कृतिक बोध के विकास पर विशेष बल दिया गया है, जो टैगोर के विचारों की गूंज जैसा प्रतीत होता है। भारत में शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव के विचारों की कभी कमी नहीं रही; समस्या हमेशा इन विचारों को व्यावहारिक धरातल पर उतारने की रही है। बाजारवादी दृष्टिकोण, अंधाधुंध प्रतिस्पर्धा और अंकों की संस्कृति ने शिक्षा को मानवीयता से दूर कर दिया है। टैगोर का दर्शन इस बाजारवाद के विरुद्ध एक सशक्त वैकल्पिक दृष्टि प्रदान करता है। अतः टैगोर के शिक्षा दर्शन को न केवल पाठ्यक्रमों में शामिल करना चाहिए, बल्कि उसे शिक्षक प्रशिक्षण, शैक्षिक वातावरण और सामाजिक सोच का हिस्सा भी बनाना आवश्यक है। तभी हम एक ऐसे भारत की ओर बढ़ सकेंगे जो केवल शिक्षित ही नहीं, बल्कि **संवेदनशील और मूल्यनिष्ठ** भी हो।

- **संदर्भ सूची**

- टैगोर, आर. (1917). शांतिनिकेतन: द बोलपुर स्कूल ऑफ रबींद्रनाथ टैगोर. मैकमिलन एंड कंपनी, पृ. 20-50. टैगोर, आर. (1919). द सेंटर ऑफ इंडियन कल्चर. इन रबींद्र रचनावली (खंड 10). विश्व-भारती प्रकाशन, पृ. 15-30.
- टैगोर, आर. (1931). द रिलिजन ऑफ मैन. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 88-110.
- मुखर्जी, एच.बी. (1962). एजुकेशन फॉर फुलनेस: अ स्टडी ऑफ द एजुकेशनल फिलॉसफी ऑफ रबींद्रनाथ टैगोर. एशिया पब्लिशिंग हाउस, पृ. 35-60.
- टैगोर, आर. (1961). टुवर्ड्स यूनिवर्सल मैन. एशिया पब्लिशिंग हाउस, पृ. 80-100.
- टैगोर, आर. (1980). माय स्कूल. इन रबींद्र रचनावली (खंड 12). विश्व-भारती प्रकाशन, पृ. 45-60.
- दत्त, के., और रॉबिन्सन, ए. (1989). रबींद्रनाथ टैगोर: अ बायोग्राफी. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 120-150.
- इस्लाम, एस. (1990). द फिलॉसफी ऑफ रबींद्रनाथ टैगोर. इंडियन काउंसिल ऑफ फिलॉसफिकल रिसर्च, पृ. 75-100.
- रॉय, एस. (2001). टैगोर'स एजुकेशनल फिलॉसफी एंड एक्सपेरिमेंट्स. विश्व-भारती रिसर्च पब्लिकेशन्स, पृ. 90-120.
- ओकॉनेल, के.एम. (2013). रबींद्रनाथ टैगोर ऑन एजुकेशन., सेक्शन 2. 10-12

- *****

डौली कुमारी
शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग
राधा गोविंद विश्वविद्यालय रामगढ़, झारखंड